Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College (Ara)
B.A Part - III
paper - 7
Topic - Modernisation of Japan - Part - I

जापान के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करें ?

19वीं शताब्दी के मध्य तक चीन की तरह जापान भी अपने को अलग रखने की कोशिश कर रहा था। शोगुन की समाप्ति और मेईजी पुनर्स्थापना ने जापान का इतिहास ही बदल दिया। इन घटनाओं ने जापान को एक नया जीवन प्रदान किया जिससे एक आधुनिक राज्य बन सका। जापान के लोग विदेशियों को किसी तरह बाहर निकलने चाहते थे लेकिन यह तभी संभव था जब विदेशियों से अपने देश की रक्षा करने के लिए उन्हीं के साधन, ज्ञान-विज्ञान, तकनीक और सैन्य-संगठन अपनाया।

अतएव, जापान में देश के आधुनिकीकरण के लिए एक बल आन्दोलन चल पड़ा जिससे देश के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आमूल परिवर्तन हुआ और जापान का कायाकल्प हो गया। साधारणतः 1868 ई० के बाद निम्नलिखित घटनाओं ने आधुनिक जापान को जन्म दिया :-

कनगावा

1 पश्चिम से सम्पर्क * पेरी जापान का दरवाजा खोलने में सफल रहा। 1854 में जापान और अमरीका में कनगावा की संधि हुई। इसके द्वारा अमरीका को शिमोडा के बन्दरगाह में अपना प्रतिनिधि भेजने और रहने का अधिकार दिया गया। शीघ्र ही पश्चिम के अन्य राष्ट्रों ने भी जापान के साथ व्यापारिक संधियाँ की। ब्रिटेन, रूस और फ्रांस ने जापान की सरकार से प्रायः वे सब अधिकार प्राप्त कर लिये जो अमरीका ने प्राप्त किये थे। और इसके साथ ही पश्चिमी राष्ट्रों के लिए जापान के द्वार खोल दिए गए। व्यापारिक और राजनीतिक सम्बन्धों के एक नये युग का सूत्रपात हुआ।

2 सामन्ती प्रथा का अन्त * जापान को केन्द्रीय शासन के अधीन लाने के लिए सामन्तवाद का अन्त आवश्यक था। तोकुगावा शोगुनों के पतन के बाद उनकी भूमि और सम्पत्ति का प्रबन्ध केन्द्रीय सरकार के हाथों में आ गया।

जापान की राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति में एक महान परिवर्तन हो गया। सदियों से चली आनेवाली सामन्ती प्रथा का अन्त हो गया और सम्पूर्ण देश एकता के सूत्र में बँध गया। अब केन्द्रीय सरकार की सत्ता सर्वोच्च हो गई और जापान एक राष्ट्र बन गया। सामन्तों की सारी कोशिशें विफल हो गई देश में उनकी हस्ती मिट गई और राष्ट्र मध्ययुग के अन्धकार से निकलकर आधुनिक युग के प्रकाश में आ गया।

सैनिक सुधार

जापान की सैनिक व्यवस्था सामन्ती प्रथा पर आधारित थी, इसलिए सामन्ती व्यवस्था के अन्त होने के कारण सेना के संगठन में परिवर्तन आवश्यक हो गया। सामुराई लोग सामन्तों की सेवा में रहकर सैनिक सेवा प्रदान करते थे लेकिन जब सामन्ती प्रथा का अन्त हो गया तो सामुराई लोगों के इस एकाधिकार का भी अन्त हो गया। और जापान के सभी वर्गों के लिए सेना में भर्ती के लिए दरवाजा खोल दिया गया। और योग्यता के अनुसार सैनिक क्षेत्र में उन्नति कर सकता था।

1872 ई० में सेना के संगठन में एक दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। जापान के नागरिकों के लिए सैनिक शिक्षा प्राप्त करने तथा निश्चित समय तक सैनिक जीवन व्यतीत करना अनिवार्य हो गया। और साथ ही विदेशी नौसैनिक प्रशिक्षकों को विदा कर दिया।

कानूनी समानता की स्थापना

1880 ई० में सामान्य जनता को पारिवारिक नाम धारण करने का अधिकार मिल गया जो सामन्तों तक ही सीमित था। सामन्त वर्ग विशेष चिह्न के रूप में दो तलवारें रख सकता था। जो की सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता था। किन्तु ~~1871~~ ई० में सरकार ने इजाजत दे दी कि जो सामन्त या सामुराई इन तलवारों को छोड़ना चाहे, वे ऐसा कर सकते हैं। और फिर कुछ समय के बाद कानून द्वारा तलवार रखना बन्द कर दिया गया। अब कोई ऐसा कानूनी अधिकार नहीं रहा जो सामन्तों को ही प्राप्त हो और सामान्य जनता को नहीं।

जापान के आधुनिकीकरण की प्रक्रियाँ को समझाएँ।

जापान के इतिहास में शोगून की समाप्ति और मेइजी पुनः स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस घटना के बाद जापान का पूर्णतः कायाकल्प हो गया और जल्दी ही जापान प्रथम श्रेणी की शक्ति और तथा एक आधुनिक राज्य बन गया। जापान की जनता विदेशियों से काफी घृणा करती थी वह प्रारंभ से ही विदेशियों को देश से बाहर निकालने के विभिन्न प्रयासों में लगी हुई थी। लेकिन चीन की दुर्दशा को देखते हुए अब जापानी यह महसूस करने लगे थे कि विदेशियों से अपने देश की रक्षा करने का एक मात्र उपाय उन्हीं के साधन ज्ञान, विज्ञान, तकनीक और सैन्य संगठन अपनाना।

अतः उनका यह मानना था कि जापान स्वयं एक आधुनिक शक्तिशाली राज्य बनकर ही पाश्चात्य साम्राज्यवाद का मुकाबला कर सकता है।

इस प्रकार जापान 1868 के बाद विभिन्न क्षेत्रों में सुधार कर आधुनिकरण की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया, जिसका वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है: —

सामंती प्रथा का अंत: —

मेइजी पुनःस्थापना के बाद सामंती प्रथा का अंत कर दिया गया लेकिन इस व्यवस्था का अंत इतनी जल्दी नहीं हुआ बल्कि सामंतवाद का अंत कई स्तरों से होकर गुजरा। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर कई सामंत स्वयं सम्राट के प्रति नतमस्तक हो गए। जो कुछ बचे रहे थे उन्हें 25 July को सम्राट के आदेश पर उसकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अब सब रियासतें सम्राट के अधीन हो गई। लेकिन जागीरो पर से सामंतों के शासन का अंत नहीं हुआ। बल्कि सामंतवाद का अंत ~~का~~ 29 Aug 1871 को सरकार ने सामंती रियासतों को पूरी तरह से खत्म करने का फैसला लिया। सारे देश को तीन शहरी प्रदेशों मे बाट दिया 72 अन्य प्रदेशों मे बाटकर केन्द्रीय शासन द्वारा नियुक्त गवर्नरों के अधीन कर दिया। प्रदेशों को (किन) जिला (गून) शहर (फू) कस्बा (माची) और गाँव (मुरा) इन भागों मे बाट दिया गया और

गर्वनरो को इनके प्रशासनाधिकारी नियुक्त करने का अधिकार दिया गया। उनमें जो पुंजीयों के अड्डे थे वे सब तोड़ दिए गए। लेकिन डैम्यो को धान की आमदनी का जो 10 वाँ हिस्सा मिलता था, उसमे कटौती नहीं की गई। समूराइयो के भत्तो मे 50% की कमी कर दी गई। बाद मे सामंतो के भत्तो में और काट-छाट कर दिया गया क्योंकि सरकार के लिए इतना खर्च उठा पाना संभव नहीं था। इस प्रकार से जापान की राजनीतिक और सामाजिक स्थित में एक महान परिवर्तन हुआ प्राचीन काल से चली आ रही सामंतवादी प्रथा का अब अंत हो गया तथा केन्द्रीय सरकार की सत्ता सर्वोच्च हो गई और जापान एक राष्ट्र बन गया।

किसानो की स्थिती में सुधार :—

सामंतवादी प्रथा के अंत हो जाने से किसानो की स्थिति पहले की अपेक्षा अच्छी हो गई। अब किसानो को अपने खेती पर स्वत्व स्थापित हो गया। पहले सामंत किसानो से उपज का एक निश्चित भाग लगान के रुप मे लेते थे लेकिन अब सरकार उपज के भाग के स्थान पर सिक्कों के रुप में मालगुजारी लेना शुरु कर दिया इससे किसानों को बहुत लाभ पहुँचा लेकिन नई सरकार के बढ़ते हुए खर्च की वजह से वह किसानो के उन सारे आकांक्षाओ को पुरा न कर सका जिसकी आशा के साथ उन्होंने शोगून व्यवस्था का विरोध तथा मेइजी व्यवस्था का समर्थन किया था। अतः किसानो ने इस नए शासन के विरोध मे विद्रोह शुरु कर दिया, तो सरकार ने 1876 ई० मे लगान की दर जमीन के कीमत के 3% से घटाकर $2\frac{1}{2}$% करनी पड़ी लेकिन इससे भी कोई खास राहत नहीं मिला।

अतः अब सरकार किसानो की स्थिति मे सुधार करने के लिए दूसरे उपायो का आवलबन किया। अब सरकार किसानो को हर तरह की राजकीय सहायता दी ताकि वे पैदावार बढ़ा सके उन्हें नए वैज्ञानिक तरीकों से खेती करने की विधी बताई गई, उत्तम बीजों का प्रबंध किया गया। लेकिन इससे भी किसान